Toppersnotes
Unleash the topper in you

RPSC

सहायक आचार्य

हिन्दी

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

पेपर – 1 || भाग – 2

SIERRA INNOVATIONS

RPSC असिस्टेंट प्रोफेसर – पेपर - I – (हिन्दी)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
इकाई - III : पाश्चात्य काव्यशास्त्र		
1.	प्लेटो के काव्य सिद्धांत	1
2.	अनुकरण का सिद्धांत	2
3.	अरस्तु का विरेचन सिद्धांत (384 ई. पू.- 322 ई. पू.)	4
4.	त्रासदी विवेचन	5
5.	लोंजाइनस का उदात्तवाद	6
6.	क्रोचे का अभिव्यंजनावाद	8
7.	कल्पना व फेंसी सिद्धांत	11
8.	टी. एस. इलियट के सिद्धांत	13
9.	मार्क्सवाद	13
10.	अस्तित्ववाद	15
11.	विखण्डनवाद	17
इकाई - IV : आदिकाल एवं मध्यकाल: निर्धारित पाठ		
12.	कबीर ग्रन्थावली	21
13.	सुरदास भ्रमरगीत सार (संपादक - रामचंद्र शुक्ल)	28
14.	जायसी ग्रंथावली (संपादक - रामचंद्र शुक्ल)	33
15.	गोस्वामी तुलसीदास कृत कवितावली	37
16.	बिहारी रत्नाकर [प्रथम 25 दोहे]	47
17.	घनानंद कवित्त (संपादक – विश्वनाथ मिश्र)	53
इकाई - V : आधुनिक काल: निर्धारित पाठ		
18.	कामायनी	55
19.	राम की शक्ति पूजा	57
20.	अँधेरे में	58
21.	गोदान	60
22.	महाभोज (1982/83)	66

23.	आधे-अधूरे – 1969	75
24.	नाखून क्यों बढ़ते हैं?	75
25.	1915 - उसने कहा था - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी सरस्वती पत्रिका	78
26.	कफ़न (मुंशी प्रेमचन्द)	79
27.	1934 - गैंग्रीन/रोज-अज्ञेय	88
28.	रांगेय राघव	89
29.	पराई प्यास का सफर	100
30.	सलाम	108
31.	आपकी छोटी लडकी	114
32.	सौंदर्य की नदी नर्मदा - अमृतलाल वेगड़	118

III UNIT

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

प्लेटो के काव्य सिद्धांत

- प्लेटो के दर्शन में मुख्यतः पांच विषयों का उल्लेख मिलता है।
  - ✓ आदर्श राज्य की अवधारणा
  - ✓ ज्ञान - मीमांस
  - ✓ आत्मा की अमरत्व - सिद्धि
  - ✓ सृष्टि - शास्त्र
  - ✓ प्रत्यय सिद्धान्त
- प्लेटो प्रत्ययवादी दार्शनिक थे।
- इस दर्शन के अनुसार विचार ही परम सत्य है और यह संसार प्रत्यय का अनुकरण है ।
- कलाकार अनुकरण का अनुकरण करता है इसलिये उसकी कलाकृति सत्य से तींन गुनी दूरी पर है।
- प्लेटो का मानना है कि परम सत्य से त्रिधा अपेत है।
- अपनी संरचना में अयथार्थ या मिथ्या होने की वजह से कोई कला कृति व्यक्ति और राज्य का कल्याण नहीं कर सकती है।
- काव्य के आधार को ही अयथार्य मिथ्या तथा काव्य के प्रभाव को अशुभ बताने के कारण प्लेटों ने आदर्श राज्य में कवि की उपयोगिता को स्वीकार नहीं करता है।
- प्लेटों सदमूल्यों को महत्व देते हैं। उनका मानना है "विवेकहीन अपरिपक्व मन पर दृष्टप्रभाव डालने वाले साहित्य का पूर्णतः निषेध होना चाहिये। चाहे वह सत्य ही क्यों न हो।
- प्लेटो ने काव्य का निषेध अनुकरण के साथ-साथ अनैतिक होने के कारण भी किया है।

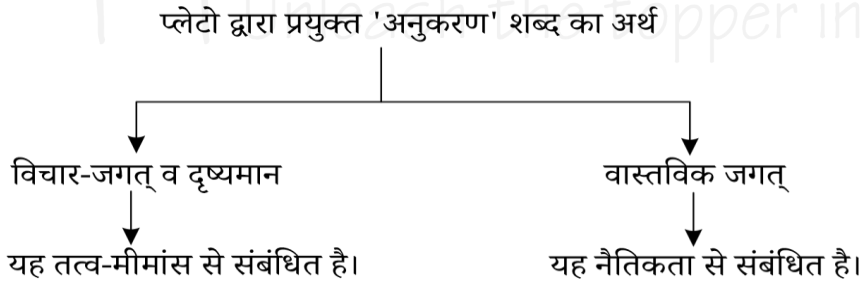

- प्लेटो ने काव्य रचना से लेकर विद्या के चयन में ईश्वरीय शक्ति का प्रभाव माना है।

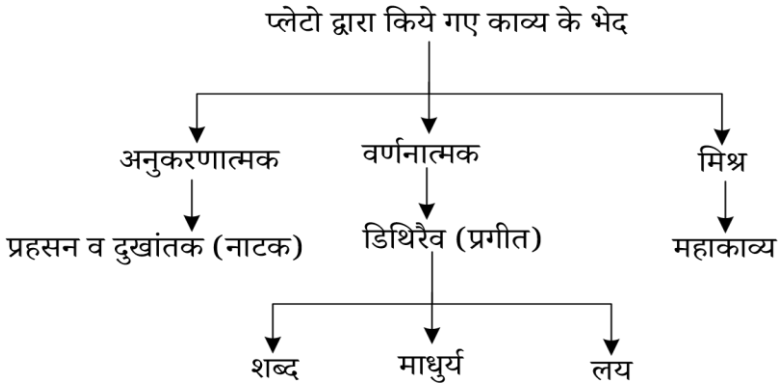

- इनमें माधुर्य और लय शब्द पर आश्रित रहते है।

अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत

- लोंजाइनस की तरह अरस्तु भी एक महान यूनानी दार्शनिक माने जाते हैं। यूनानी भाषा में अरस्तु को 'अरिस्तेतोलोस' के नाम से भी जाना जाता है। ई. पू. की पाँचवीं व चतुर्थ शताब्दी में यूनान में निम्नलिखित तीन महान दार्शनिक हुए थे:
  1. सुकरात – 470 ई. पू. से 399 ई. पू. तक
  2. प्लेटो – 427 ई. पू. से 347 ई. पू. तक
  3. अरस्तु – 384 ई. पू. से 322 ई. पू. तक
- इन तीनों विद्वानों में गुरु-शिष्य का संबंध रहा है – सुकरात के शिष्य प्लेटो, और प्लेटो के शिष्य अरस्तु थे। इन तीनों विद्वानों में से सुकरात द्वारा रचित कोई रचना वर्तमान में प्राप्त नहीं होती है। प्लेटो के द्वारा रचित निम्नलिखित 3 प्रसिद्ध रचनाएँ वर्तमान में प्राप्त होती हैं:

  1. 'इयोन' 2. 'सिम्पोजियम' 3. 'रिपब्लिक'
- प्लेटो ने यूनान में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने के लिए 'एथेंस' नामक शहर में एक शिक्षा विद्यापीठ की स्थापना की। 368 ई. पू. में अरस्तु ने इसी विद्यापीठ में आकार प्लेटो का शिष्यत्व ग्रहण किया था।
- अपने गुरु प्लेटो का अनुसरण करते हुए अरस्तु ने भी 335 ई. पू. में यूनान के अपोलो शहर में 'लीसियस' नामक अपना एक निजी विद्यापीठ स्थापित किया था।
- इसी 'लीसियस' विद्यापीठ में अध्यापन कार्य करते हुए अरस्तु ने अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, भौतिक शास्त्र, राजनीतिक शास्त्र, आचारशास्त्र, समाजशास्त्र, काव्यशास्त्र एवं मनोविज्ञान से संबंधित लगभग 400 रचनाएँ लिखीं।
- वर्तमान में अरस्तु की निम्नलिखित दो प्रसिद्ध रचनाएँ प्राप्त होती हैं:
  1. **हेटेरिअस** (यूनानी नाम: 'रितेरिकेस') – भाषण शास्त्र से संबंधित रचना
  2. **पोएटिक्स** (यूनानी नाम: 'पेरिपोइएतिकेस') – काव्यशास्त्र से संबंधित रचना

पोएटिक्स रचना से संबंधित विशेष तथ्य

- यह रचना मूलतः काव्यशास्त्र से संबंधित रचना मानी जाती है।
- यह रचना अरस्तु ने अपनी 'लीसियस' विद्यापीठ के विद्यार्थियों को काव्यशास्त्र का ज्ञान करवाने के लिए नोट्स रूप में तैयार की थी।
- इस रचना में काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं इसी प्रकार के अनेक काव्यशास्त्रीय तत्वों का विवेचन किया गया है।
- इस रचना को कुल 26 अध्यायों में विभाजित किया गया है।
- इसी रचना में अरस्तु ने समस्त प्रकार के काव्यों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभाजित किया है:

  1. ट्रेजेडी – दुःखांत काव्य **2. कॉमेडी** – सुखांत काव्य **3. एपिक** – महाकाव्य
- इसी रचना में अरस्तु ने अनेक प्रकार के काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का विवेचन भी किया था, जिनमें से निम्नलिखित 3 सिद्धान्त अत्यधिक प्रसिद्ध हुए हैं:

  1. अनुकरण का सिद्धांत 2. विरेचन का सिद्धांत 3. ट्रेजडी या त्रासदी का सिद्धांत

अनुकरण का सिद्धांत

अनुकरण शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ-

- यूनानी भाषा के अनुसार अनुकरण शब्द मीमेसिस या माइमेसिस शब्द से रचित माना जाता है।
- अंग्रेज़ी भाषा के अनुसार अनुकरण शब्द इमिटेशन शब्द से रचित माना जाता है।
- संस्कृत भाषा के अनुसार अनुकरण शब्द – अनु (उपसर्ग) + कृ (धातु) + ल्युट (प्रत्यय) – के योग से रचित माना जाता है।

- शब्दकोश के अनुसार अनुकरण शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है – नकल करना। अर्थात, जब किसी एक पदार्थ को देखकर उसकी सादृश्यता/समानता के आधार पर किसी अन्य पदार्थ की रचना कर ली जाती है, तो वही अनुकरण का सिद्धांत कहलाता है।
- साहित्य के क्षेत्र में जब कोई कवि अथवा लेखक किसी सांसारिक/प्राकृतिक पदार्थ को देखकर उसकी समानता के आधार पर कोई काव्य रचना कर लेता है, तो उसे ही अनुकरण का सिद्धांत कहा जाता है।
- साहित्य के क्षेत्र में अनुकरण का सिद्धांत सर्वप्रथम प्लेटो के द्वारा प्रतिपादित किया गया था। आगे चलकर प्लेटो के शिष्य अरस्तु ने कुछ परिवर्तन करके पुनः इस सिद्धांत को प्रतिपादित किया था।

अनुकरण की परिभाषाएँ:

1. **प्रो० ब्रूचार के अनुसार:** "किसी सादृश्य वस्तु के आधार पर मूल वस्तु का पुनराख्यान ही अनुकरण कहलाता है।"
2. **प्रो० गिलबर्ट मरे के अनुसार:** "अनुकरण सर्जना का अभाव नहीं, अपितु पुनर्सृजन है।"
3. **प्रो० एटकिन्स के अनुसार:** अनुकरण का अर्थ है – पुनः सृजन करना।"
4. **पॉट्स के अनुसार:** अनुकरण का अर्थ है – जीवन का पुनः सृजन करना।"
5. **स्कॉट जेम्स के अनुसार:** अनुकरण जीवन के सारांश का कलात्मक पुनर्निर्माण है।"

- उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी भी एक वस्तु को देखकर उसकी सादृश्यता/समानता के आधार पर किसी अन्य वस्तु की रचना कर ली जाती है अथवा पुनः रचना करने का प्रयास किया जाता है, तो वही अनुकरण का सिद्धांत कहलाता है।

अरस्तु के अनुकरण सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ:

1. प्लेटो ने अपने अनुकरण सिद्धांत में काव्यशास्त्र को दर्शनशास्त्र एवं राजनीति शास्त्र के अंतर्गत शामिल किया था, जबकि अरस्तु ने काव्यशास्त्र को एक स्वतंत्र विषय के रूप में प्रतिपादित किया।
2. प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत केवल आदर्शवाद पर आधारित था, जबकि अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत यथार्थवाद पर आधारित माना जाता है।
3. प्लेटो ने केवल अपने अनुकरण सिद्धांत में केवल दृश्यमान जगत या बाहरी संसार को शामिल किया था। अरस्तु ने केवल अपने अनुकरण सिद्धांत में बाहरी जगत के साथ-साथ कवि की आंतरिक भावनाओं एवं मनोवृत्तियों को भी शामिल कर दिया था। अर्थात् अरस्तु के अनुसार कवि सबसे पहले सांसारिक/प्राकृतिक पदार्थों को देखता है और उसके पश्चात अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए उन्हें नया रूप देने का प्रयास करता है। अरस्तु के अनुसार काव्य कला को संगीत कला के समकक्ष माना गया है। अरस्तु ने अपने अनुकरण सिद्धांत में अनुकरण को भावनात्मक अनुकरण कहा है। अरस्तु के अनुसार चित्रकार/कलाकार की तरह कवि को भी अनुकर्ता कहकर पुकारा गया है। परंतु दोनों में उन्होंने यह अंतर भी माना है कि चित्रकार तो अपने अनुकरण में केवल रंग व रूप को ही स्थान देता है, जबकि एक कवि अपने अनुकरण में 'भाषा, लय, सामंजस्य, इन तीनों तत्त्वों को स्थान देता है। अरस्तु ने काव्य कला को ही सर्वोत्तम काव्य कला भी कहकर पुकारा है। एवं काव्य कलाओं में भी वे नाटक को सर्वोत्तम काव्य कला मानते हैं।
   - ✓ अरस्तु के अनुसार किसी भी काव्य की रचना करते समय कवि प्रमुखतः निम्नलिखित तीन अनुकार्यों (बातों) का ध्यान रखता है एवं इन तीन में से किसी एक अनुकार्य (बात) को विशेष महत्व भी देता है:
     - वे जैसी थीं या हैं।
     - वे जैसी कही या समझी जाती हैं।
     - वे जैसी होनी चाहिए।

अरस्तु के अनुकरण सिद्धांत की आलोचनाएँ:

1. डॉ० नागेन्द्र के अनुसार – अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत अभावात्मक माना गया है।
2. बाबू श्यामसुंदर दास के अनुसार – अरस्तु ने अपने अनुकरण सिद्धांत में आंतरिक भावनाओं/मनोवृत्तियों को भी स्थान दे दिया है, जबकि वास्तविकता में इनको अनुकरण में शामिल नहीं किया जा सकता है।
3. कुछ समीक्षकों के अनुसार – अरस्तु ने रचना शैली और कला तत्व/आत्म तत्व की अपेक्षा विषयवस्तु - वस्तुतत्त्व के अनुसार अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत का विरोधी भी माना गया है। कुछ अन्य समीक्षकों के अनुसार – अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत कोलरिज के सहजानुभूति सिद्धांत का विरोधी भी माना गया है।

कुछ प्रसिद्ध कथन:

1. **डिविड डोनिस:** "काव्य प्रकृति की अनुकृति है।" → Poetry is the imitation of nature.
2. **अरस्तु:** "कला प्रकृति की अनुकृति है।" → Art is the imitation of nature.
3. **अरस्तु:** "प्रत्येक वस्तु अपने पूर्ण रूप में जैसी होती है, उसे ही हम प्रकृति कहते हैं।"
4. **अरस्तु के अनुसार:** "किसी भी कवि के द्वारा रचा गया काव्य सामान्य की अभिव्यक्ति होती है, जबकि लेखक द्वारा लिखा गया इतिहास विशेष /विशिष्ठ की अभिव्यक्ति होता है।"

अरस्तु का विरेचन सिद्धांत (384 ई. पू.- 322 ई. पू.)

- प्लेटो का मानना था कि करुणा, व्यंग्य व त्रास आदि भाव मानव-मन को दुर्लभ बनाते हैं। अतः कवि और उसकी कविता राजसत्ता के लिए घातक होते हैं। और एथेंस की पराजय का मौलिक कारण भी कवि हैं।
- इसलिए एथेंस का गुरु होने के नाते में सिकंदर महान अध्यादेशिक करता हूँ कवियों को तड़ीपार कर दिया जाए।
- **इसी समय प्लेटो के शिष्य अरस्तु राजसभा में खड़े हुए** और प्लेटो के मत का खंडन करते हुए प्रतिपादित किया कि कवि समाज को उकसाते नहीं, बल्कि कविता मन व आत्मा दोनों का **शुद्धिकरण (कथार्सिस)** करती है।
- **इस कविता से मानव जाति की आध्यात्मिक भूख शांत होती है।**
- अरस्तु ने अपने ग्रंथ के लिए 'पाईटिक्स' शब्द का प्रयोग किया है, जिसका हिंदी रूपांतरण है — **विशेषण**।
- अरस्तु 'विरेचन' को व्याख्यायित करते हुए कहते हैं कि जब उदर (पेट) में अपच होती है तो दस्त करवाये जाते है जिससे पाचन क्रिया का निवारण हो सके।
- यदि पित्ताशय में पित्त जमने उसके **विरेचन (शुद्धिकरण)** हेतु वमन (उल्टी) करवाई जाती है।
- **परंतु जिस मनुष्य की आत्मा में ही मल (गंदगी) या गंदे विचार जमा हो जाते हैं**, अर्थात् मानसिक दुर्भावनाएँ जम जाती हैं, तो दुनिया में **कविता के अलावा और कोई औषधि नहीं है।**
- **इसलिए 'कविता आत्मा का भोजन है'**, जिससे हृदय के बुरे भावों और मनोविकारों का शुद्धिकरण होता है।
- **कविता से मानव मन को विस्तार प्राप्त होता है और मनुष्य सागर मुद्रा जैसा अनुभव करता है।**
- **परिणामतः मनुष्य में दया, ममता, करुणा, सेवा और सहानुभूति जैसे तत्त्वों व कोमल भावों का उदय होता है** तथा मन को **स्फूर्ति** मिलती है। **सुख व शांति की प्राप्ति होती है। अतः कविता और कवि समाज के लिए अपरिहार्य हैं।**
- **इस तथ्य को सुनकर 'प्लेटो' को कहना पड़ा—** "यदि एथेंस का शरीर है, तो अरस्तु उसका मुकुट है। और "अब राजगुरु का राजमुकुट अरस्तु सुशोभित करेगा। मैं वानप्रस्थ की ओर जा रहा हूँ।" – (प्लेटो)
- **अरस्तु के बाद अनेक आलोचकों ने 'विरेचन' को अपने-अपने तरीकों से व्याख्यायित किया।**

- जिसके दो प्रमुख व्याख्याता हैं:

  (1) प्रो. गिल्बर्ट मर्रे (धर्मपरक)

  (2) जर्मन विद्वान बासेघ (नीतिपरक)

प्रो. गिल्बर्ट मर्रे मरे

- इन्होंने विरेचन को धर्मपरक माना है। इनके अनुसार विरेचन प्रेक्षक को धर्मपाल होता है मन में धार्मिक प्रवृत्तियाँ उभरती हैं और मानव की आत्मा को शांति व शुद्धि की प्राप्ति होती है। जिससे प्रेक्षक को धर्म लाभ प्राप्त होता है।

जर्मन विद्वान बारनेज

- इन्होंने विरेचन को **नीतिपरक** माना है। मानव मन में विकार एक वासना रूप में स्थित रहती हैं और विरेचन की प्रक्रिया से मन की ग्रंथियों खुल जाती हैं और अपशिष्ट भावों का विरेचन हो जाता है।
- जिससे मानसिक संतुलन व स्वास्थ्य की सिद्धि होती है
- इससे पाठक में **नैतिकता का विकास** होता है। अर्थात् मनुष्य **नीतिवान** बनता है।
- **आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान और मनोविज्ञान भी इस बात की पुष्टि करता हैं।**
- **और यही है —"यूनानी दार्शनिक अरस्तु का विरेचन सिद्धांत"।**

त्रासदी विवेचन

- ग्रीक साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा।
- त्रासदी अंग्रेजी के ट्रेजडी का हिंदी रूपांतरण है।
- त्रासदी का पश्चिमी में सर्वप्रथम विवेचन यूनान में हुआ।
- त्रासदी का आरम्भ मंदिरा व उल्लास के देवता निओनिसीअस" के सम्मान में होने वाले समारोह जाता है
- त्रासदी की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है -
  - ✓ त्रासदी कार्य व्यापार का अनुकरण है।
  - ✓ त्रासदी की भाषा - लय समाजस्य गीत से बनती है।
  - ✓ कार्य व्यापार - अभिनय क्षेत्र प्रस्तुत होता है वर्णन द्वारा नहीं।
  - ✓ कार्य व्यापार - गंभीर पूर्ण और विस्तृत होता है।
- अरस्तु ने त्रासदी के छः तत्व माने है -

कथनाक

- कथनाक के लिए अरस्तु से संकलन- त्रय का सिद्धांत दिया इसमें देश, काल और कार्य के अनुपातिक संयोजन के माध्यम से कथनाक ने निर्माण को सुनिश्चित किया
- कथनाक का अर्थ है - त्रासदी की विषय वस्तु का घटना - दिव्यास
- कथनाक के लिये अरस्तु ने तीन विशेषण रखे

  (i) गंभीर

  (ii) पूर्ण

  (iii) विस्तृत

- **चरित्र** - त्रासदी में नायक का पतन आवश्यक होता है इसलिये यह पतन निर्णायात्मक मूल के कारण होना चाहिये जिसे अरस्तू ने हेमर्सिया कहा है।
- **विचार** - अरस्तु का मानना है कि त्रासदी का जन्म ही विचारों के गर्भ से होता है।
- **पद विन्यास या भाषा** - अरस्तू ने कहा है कि त्रासदी में भाषा अर्थात् संवादों से व्यक्त होने वाले भाव के लिये दृश्य की अनिवार्यता नहीं होनी चाहिये।
- **गीत** - भावों की अभिव्यक्ति का सबसे सटीक और ताकतवर माध्यम अरस्तू ने गीत को बताया है।
- **दृश्य** - दृश्य का संबंध अभिनय या अभिनेता से है और अभिनेता त्रासदी का प्राण तत्व है।

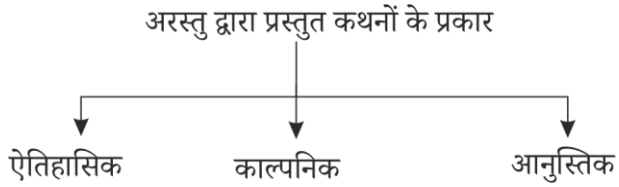

त्रासदी के संबंध में अरस्तु, के विचार

- त्रासदी किसी गंभीर स्वतः पूर्ण था निश्चित आयान से युक्त कार्य व्यापार की अनुकृति का नाम है जिसे भाषा में विभिन्न कलात्मक तरीकों से अलंकृत किया जाता है व जिसके पृथक-पृथक हिस्सों में उस निश्चित कार्य व्यापार के विधिक प्रकार पाए जाते हैं।
- दुखमंक ऐसे कार्य व्यापार का अनुकरण है जो करूणा व भाव को उद्बुद्ध कर इन भावों का उचित विरेचन करे।

लोंजाइनस का उदात्तवाद

- लोंजाइनस एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक माने जाते हैं।
- यूनानी भाषा में इन्हें 'लोजाइनस' के नाम से तथा अंग्रेजी भाषा में "लॉन्गिनस" के नाम से जाना जाता है।
- इनका स्थिति काल तृतीय शताब्दी ई. माना जाता है। इनके द्वारा रचित एकमात्र रचना पेरिइप्सुस नाम से प्राप्त होती है।
- तृतीय शताब्दी ई. से 16वीं शताब्दी तक यह रचना केवल हस्तलिखित पाण्डुलिपि के रूप में ही प्राप्त होती थी।
- सर्वप्रथम 1554 में रोवेरतेल्लो नामक विद्वान के द्वारा इसे इतालवी भाषा में अनुवाद करके प्रकाशित कराया गया।
- 1652 ई. में जॉन हॉल नामक विद्वान के द्वारा (On the Heights of Eloquence) नाम से इसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करके प्रकाशन करवाया था।
- अपनी इस रचना (पेरि इप्सुस) में लोंजाइनस ने श्रेष्ठ काव्य रचना के लेखन के संबंध में जो विचार प्रस्तुत किए हैं, उन विचारों को ही उदात्तवाद, औदात्यवाद, या काव्य का उदात्त तत्व के नाम से पुकारा जाता है।
- इनके प्रस्तुत भाषण कला संबंधी विचारों को ही आगे चलकर काव्य लेखन संबंधी विचारों में गिना गया है।
- अंग्रेज़ी भाषा में लोंजाइनस के इन विचारों को On the Sublime के नाम से पुकारा जाता है।
- On the Sublime का शाब्दिक अर्थ होता है— "ऊँचाई की ओर जाना"।
- यह रचना पेरिहुप्सुस मूलतः भाषणशास्त्र से संबंधित रचना मानी जाती है।
- इस पेरिहुप्सुस रचना को कुल 44 अध्यायों में विभाजित किया गया है।
- लोंजाइनस ने अपने एक रोमन मित्र 'पोस्टुमियस तेरेन्तियानुस' को भाषण कला का ज्ञान कराने के लिए कुल 44 पत्र लिखे थे। उन 44 पत्रों का संकलन पेरि इप्सुस नाम से किया गया है।
- यह रचना पत्र शैली / पत्रात्मक शैली में रचित रचना मानी जाती है।
- भारतीय काव्यशास्त्र की दृष्टि से लोंजाइनस का उदात्तवाद, आचार्य कुंतक द्वारा प्रतिपादित वक्रोक्ति वाद से मिलता-जुलता नजर आता है।
- पेरि इप्सुस का पहला अनुवाद → 1554 में रोवेरतेल्लो ने इतालवी भाषा में।
- पेरि इप्सुस का पहला अनुवाद - 1652 में जॉन हॉल ने अंग्रेज़ी में On the Heights of Eloquence के नाम से।

लोंजाइनस के उदात्तवाद की प्राप्ति के प्रमुख साधन / स्रोत / तत्व:

- लोंजाइनस ने अपने उदात्तवाद की प्राप्ति के लिए 5 साधन / स्रोत / तत्व प्रतिपादित किए हैं, यथा— (लेखक का व्यक्तित्व + चरित्र श्रेष्ठ हो)
  1. **उदात्त विचार या महान विचारोद्भावना को क्षमता**
  2. **उदात्त भावों का चित्रण / भावावेग**
  3. **अलंकार नियोजन**
  4. **उत्कृष्ट भाषा** - उत्कृष्ट साहित्यिक भाषा का प्रयोग।
  5. **गरिमामय रचना विधान** - क्रमबद्ध रूप से छंदों के साथ लिखना चाहिए।
- **विवरण:**
  1. **उदात्त विचार या महान विचारोद्भावना को क्षमता** लोंजाइनस के अनुसार उदात्तवाद के लिए अथवा एक श्रेष्ठ काव्य रचना के लिए कवि अथवा लेखक का स्वयं का व्यक्तित्व एवं चरित्र वाला व्यक्ति ही श्रेष्ठ विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है।
  2. **उदात्त भावों का चित्रण / भावावेग** लोंजाइनस के अनुसार उदात्तवाद के लिए अथवा एक श्रेष्ठ काव्य रचना के लिए कवि अथवा लेखक को अपने मन में उत्पन्न होने वाले सभी विचारों/भावों का चित्रण करना आवश्यक होता है। लोंजाइनस के अनुसार भावावेग भी 2 प्रकार के माने गए हैं:
     (i) सुखात्मक / अव्य भावावेग — रति, हास्य, शौर्य, वीरता, उत्साह इत्यादि।
     (ii) दुखात्मक भावावेग — भय, करुणा, निराशा, हताशा इत्यादि।
  3. **अलंकार नियोजन** लोंजाइनस के अनुसार उदात्तवाद के लिए अथवा एक श्रेष्ठ काव्य रचना के लिए कवि अथवा लेखक ने उस काव्य में अलंकारों का प्रयोग भी आवश्यक माना है। लोंजाइनस के अनुसार काव्य में अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से ही किया जाना चाहिए। कवि को बलपूर्वक अलंकार लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। लोंजाइनस के अनुसार अलंकार भी दो प्रकार के माने गए हैं:
     1. शब्दालंकार
     2. विचारालंकार (अर्थालंकार)
  4. **उत्कृष्ट भाषा** लोंजाइनस के अनुसार उदात्तवाद के लिए अथवा एक श्रेष्ठ काव्य रचना के लिए अपने काव्य में उत्कृष्ट साहित्यिक भाषा का प्रयोग करना भी आवश्यक माना गया है। अर्थात् कवि को अपने काव्य में ग्रामीण बोलचाल की भाषा के शब्दों अथवा तुच्छ/क्षुद्र/संकुचित अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग नहीं करके श्रेष्ठ साहित्यिक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।
  5. **गरिमामय रचना विधान** लोंजाइनस के अनुसार उदात्तवाद के लिए अथवा श्रेष्ठ काव्य रचना में कवि अथवा लेखक को अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप में छंद के साथ लिखना चाहिए। अर्थात् अपने काव्य में सभी विचारों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना चाहिए एवं आवश्यकतानुसार समुचित छंदों का प्रयोग भी करना चाहिए।

लोंजाइनस के उदात्तवाद की प्रमुख विशेषताएँ

- उदात्तवाद के अंतर्गत अभिव्यक्ति की उच्चता/उत्कृष्टता को शामिल किया जाता है।
- उदात्तवाद के अंतर्गत कवि/लेखक के (उच्च) व्यक्तित्व एवं चरित्र को भी शामिल किया जाता है।
- उदात्तवाद में वस्तु, विचार एवं भाव—इन तीनों शैलियों का सामंजस्य भी देखने को मिलता है।
- उदात्तवाद में "वस्तुपक्ष" एवं "शैली पक्ष" दोनों को समान महत्व दिया जाता है।
- उदात्तवाद में पाठकों/श्रोताओं की समस्याओं का निराकरण भी किया जाना चाहिए तथा काव्य रचना पाठकों/श्रोताओं को आनंदित करने वाली होनी चाहिए।

उदात्तवाद के बाधक/विरोधी तत्व

- लोंजाइनस के अनुसार यदि किसी काव्य में निम्नलिखित प्रकार के तत्व पाए जाते हैं, तो वे उदात्तवाद की प्राप्ति में बाधक या विरोधी तत्व माने जाते हैं:
  1. भाषा की अस्पष्टता एवं अव्यवस्था
  2. आडम्बरपूर्ण भाषा शैली
  3. कठिन शब्दावली
  4. ग्रामीण बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग
  5. क्षुद्र/तुच्छ/संकुचित अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग
  6. अत्यधिक वाग्विस्तार/अनावश्यक वाग्विस्तार

NOTE: भारतीय काव्यशास्त्र में इन सभी बाधक या विरोधी तत्वों को काव्य दोष के नाम से पढ़ा जाता है।

उदात्तवाद के प्रमुख पक्ष → 3

- लोंजाइनस के अनुसार उदात्तवाद के प्रमुखतः 3 पक्ष माने जाते हैं:
  1. **अंतरंग पक्ष** – इसके अंतर्गत निम्नलिखित दो तत्वों को शामिल किया जाता है:
     (क) उदात्त विचार या महान विचारोद्भावना की क्षमता
     (ख) उदात्त भावों का चित्रण या भावावेग
  2. **बहरींग पक्ष** – इसके अंतर्गत भी निम्नलिखित 3 तत्वों को शामिल किया जाता है:
     (क) अलंकार नियोजन
     (ख) उत्कृष्ट भाषा
     (ग) गरिमामय रचना विधान
  3. **विरोधी पक्ष** – इनके अंतर्गत सभी बाधक तत्वों को शामिल किया जाता है।

उदात्तवाद की प्राप्ति के प्रमुख आधार

- लोंजाइनस के अनुसार उदात्तवाद की प्राप्ति के लिए प्रमुखतः दो आधार माने गए हैं:
  1. कवि की प्रतिमा
  2. कवि का व्यक्तित्व
- कहने का तात्पर्य यह है कि एक प्रतिभाशाली एवं श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाला व्यक्ति ही श्रेष्ठ रचना कार्य कर सकता है। जिस व्यक्ति का स्वयं का जीवन तुच्छ/क्षुद्र/संकुचित विचारों से भरा रहता है, वह कभी भी श्रेष्ठ काव्य रचना नहीं कर सकता है।

क्रोचे का अभिव्यंजनावाद

बेनेदेत्तो क्रोचे

बेनेदेत्तो क्रोचे (25 फ़रवरी 1866 – 20 नवम्बर 1952) इटली के आत्मवादी दार्शनिक थे। उन्होंने अनेकानेक विषयों पर लिखा जिनमें दर्शन, इतिहास, सौन्दर्य शास्त्र आदि प्रमुख हैं। वह उदारवादी विचारक थे, किन्तु उन्होंने मुक्त व्यापार का विरोध किया।

अभिव्यंजनावाद के प्रवर्तक बेनेदेत्तो क्रोचे मूलतः आत्मवादी दार्शनिक हैं। उनका उद्देश्य साहित्य में आत्मा की अन्तः सत्ता स्थापित करना था। इनसे पूर्व काण्ट ने मन तथा बाह्य जगत् के तादात्म्य और समन्वय का प्रतिपादन करते हुए दृश्य जगत् की उपेक्षा की और हीगेल ने काण्ट की मान्यता स्वीकार करते हुए दृश्य जगत् को भी महत्त्व प्रदान किया। इसके विपरीत क्रोचे ने केवल मानसिक प्रक्रिया को ही महत्त्व दिया है। उनकी दृष्टि में बाह्य उपकरण गौण साधन मात्र हैं। क्रोचे का अभिव्यंजनावाद कला के मूल तत्त्व की खोज का प्रयास है। कला का वास्तविक तत्त्व क्या है अथवा उसकी आत्मा क्या है? इस विषय में क्रोचे ने अपना गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है, जो सूक्ष्म भी है। क्रोचे के समस्त सौन्दर्य-विवेचन में आत्म-तत्त्व प्रतिष्ठित है। यह आत्म-तत्त्व कलाकार की चेतना है। इस आत्म-तत्त्व को क्रोचे ने आन्तरिक अभिव्यक्ति कहा है, जो इस जगत् में मुख्य रूप से दो प्रकार की प्रतिक्रिया करता है।

अभिव्यंजनावाद

अभिव्यंजनावाद इटली, जर्मनी और आस्ट्रिया से प्रादुर्भूत प्रधानतः मध्य यूरोप की एक चित्र-मूर्ति-शैली है जिसका प्रयोग साहित्य, नृत्य और सिनेमा के क्षेत्र में भी हुआ है।

- अभिव्यंजनावाद एक कला सिद्धांत है, जिसका संबंध सौंदर्यशास्त्र से है न कि साहित्यिक आलोचना से।
- क्रोचे की मान्यता है कि कलाकार अपनी कलाकृति में अपने अंतर की अभिव्यक्ति करता है। यह अभिव्यक्ति बिंबात्मक होती है, जिसका स्वरूप उसके हृदय में विद्यमान होता है, बाह्य जगत से उसका कोई संबंध नहीं। बाह्य जगत केवल बिंब निर्माण में सहायक हो सकता है।

क्रोचे का अभिव्यंजनावाद

क्रोचे के अनुसार, "**अंतःप्रज्ञा के क्षणों में आत्मा की सहजानुभूति ही अभिव्यंजना है**"। कला के क्षेत्र में इसे आवाँ गार्द (हिरावल दस्ते) के रूप में जाना जाता है।

अभिव्यंजनावाद की मूल संकल्पना है कि कला का अनुभव बिजली की कौंध की तरह होता है, अतः यह शैली वर्णनात्मक अथवा चाक्षुष न होकर विश्लेषणात्मक और आभ्यंतरिक होती है। उस भाववादी (इंप्रेशनिस्टिक) शैली के विपरीत जिसमें कलाकार की अभिरुचि प्रकाश और गति में ही केंद्रित होती है, अभिव्यंजनावादी प्रकाश का प्रयोग बाह्य रूप को भेद कर भीतर का तथ्य प्राप्त कर लेने, आंतरिक सत्य से साक्षात्कार करने और गति के भाव-प्रक्षेपण आत्मान्वेषण के लिए करता है। वह रूप, रंगादि के विरूपण द्वारा वस्तुओं का स्वाभाविक आकार नष्ट कर अनेक आंतरिक आवेगात्मक सत्य को ढूँढ़ता है।

क्रोचे का अभिव्यंजना सिद्धांत साहित्य या कला-समीक्षा की कसौटी प्रस्तुत नहीं करता, वरन् यह कला की उत्पत्ति या सृजन-प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

क्रोचे की दृष्टि में कला

क्रोचे की कला-विषयक धारणा की दो आधारशिला हैं - **अंतःप्रज्ञा** और **अभिव्यंजना**। अंग्रेजी के 'इंट्यूशन' शब्द के लिए स्वयंप्रकाश ज्ञान, सहज ज्ञान, सहजानुभूति, अंतःप्रज्ञा आदि अनेक शब्द प्रयोग हुए हैं।

- **अंतःप्रज्ञा और अभिव्यंजना का संबंध:** अंतःप्रज्ञा के साथ अभिव्यंजना का नित्य संबंध है, अर्थात् जहाँ भी अंतःप्रज्ञा होगी, वहाँ अभिव्यंजना जरूर होगी। यह संभव नहीं है कि हम किसी चीज को जानें और उसे कह न सकें या जिसे कहें, उसे जानें नहीं।
- **अंतःप्रज्ञा और बुद्धि:** "अंतःप्रज्ञा या आध्यात्मिक अनुभूति कल्पना का विलास नहीं है, बल्कि विश्वसनीय ज्ञान है। वह प्रत्यक्ष की अपेक्षा कहीं अधिक सत्य और सबल है।" अंतःप्रज्ञा एकीकरण, अखंड रूप में देखती है, जबकि बुद्धि विभाजन, खंडित रूप में। अतः अंतःप्रज्ञा और बुद्धि परस्पर पूरक और सहायक हैं।
- **अंतःप्रज्ञा और कला:** अंतःप्रज्ञा और अभिव्यंजना में भेद नहीं है, वैसे ही अंतःप्रज्ञा और कला में भेद नहीं हैं। जब अंतःप्रज्ञा स्फुरित होती है तो वह अभिव्यंजना के द्वारा कला में परिणत हो जाती है।

कला का स्वरूप

क्रोचे की दृष्टि में कला पूर्णतया एक **आंतरिक व्यापार** है। कलाकार के मानस में जब कोई प्रभाव बिम्ब के रूप में प्रकाशित होता है, बस उसी समय अभिव्यंजना भी हो जाती है। यह व्यापार चित्त की जिस अन्तर्वृत्ति के कारण घटित होता है उसे **सहज ज्ञान** कहेंगे। सहज ज्ञान की निष्पत्ति में बुद्धि और तर्क का कोई सहयोग नहीं रहता है; यह अनायास स्वतः उद्भूत होता है।

- सहजानूभूति ही सच्ची अभिव्यंजना है और यही कला का शुद्धरूप है। कलाकार के मानस में प्रभाव का बिम्ब-विधान हुआ कि अभिव्यंजना हुई और कला भी वहीं पर फलवती हो गयी। ऐसी स्थिति में, कला का यह आध्यात्मिक रूप केवल वह कलाकार ही देख सकता है, पाठक, श्रोता या दर्शक कदापि नहीं। कला कलावंत के अन्तर्मानस में अभिव्यक्त होती है और अपना सौन्दर्य उनके अंतःकरण में ही विकीर्ण कर तत्काल विलीन हो जाती है।

- किसी ने चॉद या फूल देखा, और कल्पना में उसके प्रभाव का रूपांकन किया कि वह कलाकार हो गया। क्योंकि उसके मानस में सहजानुभूति के द्वारा पूफल के प्रभाव की बिम्बमूलक अभिव्यक्ति हो चुकी है। जैसे, कोई चित्रकार या मूर्तिकार के मन में वह चित्र पहले से रहता है वह केवल छेनी-हथौडे से पत्थर को काट-तराशकर एक-एक भाव उत्कीर्ण कर मूर्ति गढ़ता है अत: वह वास्तविक मूर्ति नहीं हैं, वास्तविक मूर्ति तो मूर्तिकार की मन (अंतःप्रज्ञा) में थी। यह उसका प्रतिभास है। फलत: कुरूप का अर्थ केवल असफल अभिव्यंजना है। सुन्दर में एकता होती है और कुरूप में अनेकता।
- **कलात्मक निर्माण के चार चरण:**
  1. संस्कार
  2. अभिव्यंजना
  3. आनंद
  4. भौतिक द्रव्यों द्वारा बाह्यीकरण

कलाकार और कलाकृति

- क्रोचे के मतानुसार, प्रत्येक व्यक्ति जिसे सहजानुभूति होती है कलाकार है। कलाकार का यह परम अनुग्रह है कि वह अपनी आध्यात्मिक अभिव्यक्ति को शब्द, रेखा, गति, नाद आदि के माध्यम से हम सबों के लिए उसे बाह्य रूप में पुनः अभिव्यक्त करता है। मनुष्य भ्रांतिवश कला में बाह्य रूप को कला ही कह कर पुकारता है। कला का शुद्ध वास्तविक रूप केवल कलाकार के मानस में अभिव्यंजित होता है। कला के बाह्य रूप को, कलाकृति को-कविता, चित्रा, मूर्ति, संगीत को-कला कहना एक औपचारिक प्रयोग है। बाह्य कलाकृति आंतरिक शुद्धकला की एक प्रतीक है। प्रतीक मूल वस्तु की प्रतिनिधि हो सकता है, मूल वस्तु कदापि नहीं। शब्द के माध्यम से लिखित मेघदूत असली कला नहीं है वास्तविक मेघदूत तो कालिदास की कल्पना में रूपायित हो चुका। लिखित मेघदूत कल्पना में अंकित मेघदूत की अनुकृति है। विन्चे, एन्जोलो, रैपफेल, पिकासो आदि चित्राकारों के मूर्ति चित्रों में असली कला नहीं है, शुद्धकला तो उनकी कल्पना में ही अवतरित हुई।

क्रोचे का सौंदर्य-निरूपण

सौन्दर्य मात्र अभिव्यंजना है। कोचे फूल, तितली या इन्द्रधनुष में सुन्दरता की सत्ता नही स्वीकार करते। सुन्दरता किसी वस्तु में नहीं रहती, वह वस्तु के प्रभाव की सफल अभिव्यंजना में रहती है। किसी वस्तु में सुन्दरता द्रष्टा की विशेष मनोदशा के करण प्रकट होती है। कोचे ने कलागत सुन्दरता को अभिव्यंजना से भिन्न नहीं माना है। उनके मतानुसार सफल अभिव्यंजना ही सुन्दरता है और असफल अभिव्यंजना कुरूपता।

- कुरूपता के कलागत सौन्दर्य के लिए यह आवश्यक है कि उसमें कुछ कुरूपता भी वर्तमान रहे। कलाकृति में सुन्दर और कुरूप दोनों प्रकार के तत्त्वों के बीच संघर्ष चलता रहता है। सुन्दर कुरूप पर विजय प्राप्त करता है यानी, वैषम्य का विनाष और साम्य का सर्जन होता है। कुरूप तत्त्व अंत में अपने को सुन्दर में विलीन कर लेता है। उसकी अवरिथति सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए अनिवार्य है।
- जिस प्रकार अंधकार पर विजय प्राप्त करने से प्रकाश की गरिमा निखरती है, उसी प्रकार कुरूप पर विजय प्राप्त कर सुन्दर अपनी श्रीवृद्धि करता है। लेकिन, जहाँ कुरूप अंत तक संघर्षरत रहता है वह सुन्दर के चरणों में नताशिर नहीं होता है, वहाँ मिश्रता या भिन्नता का बोध बना ही रहता है। पूरी अन्विति के बिना अभिव्यक्ति सफल नहीं होगी और सुन्दरता का आस्वादन भी नहीं होगा। इसलिए, सुन्दर का असफल संघर्ष ही कुरूप है। सफल कलाकृति में सुन्दरता की भवानी कुरूपता के महिषासुर पर विजय प्राप्त कर सौम्य स्मृति की किरणें बिखेरती है।
- अभिव्यंजना सदा सफल होती है, क्योकि असफल अभिव्यंजना अभिव्यंजना नहीं कही जा सकती। सुन्दरता अपने को सदा एकता या अन्विति के रूप में अभिव्यक्त करती है और कुरूपता अपने को अनेक तत्त्वो के बेमेलपन में प्रकट करती है।
- कई तत्त्वों का सामंजस्य सुन्दरता है और उनका वैषम्य कुरूपता।

- कला में पूर्ण कुरूपता की भावना क्रोचे का कोई कल्पित आदर्श ही है। क्योंकि, इन्हीं के मतानुसार प्राकृतिक वस्तु न सुन्दर है, न कुरूप ही। तो, सुन्दरता या कुरूपता सहृदय की विशेष चित्त दशा की अनुभूति ही कही जा सकती है। इसलिए, पूर्ण कुरूपता का बोध, यदि वह है, तो, विशेष चित्तदशा में ही संभव है। लेकिन, यह हम जानते हैं कि कोई भी संस्कार तभी तक कुरूप है जब तक वह सहजानुमूति में रूपायित नहीं हुआ है। कुरूप प्रभाव भी अभिव्यंजना में आ कर सुन्दर हो उठता है।
- क्रोचे का मत है कि 'सुन्दर कोई पदार्थगत तथ्य नहीं है, यह वस्तुओं में नहीं रहता बल्कि व्यक्ति के क्रिया-व्यापार में, आत्म-शक्ति में वर्तमान रहता है। जीव वैज्ञानिकों की दृष्टि में सौन्दर्य का कोई महत्त्व नहीं। वे किसी पक्षी या फूल का सारा हुलिया बता सकते हैं, लेकिन यह नहीं कह सकते कि सुन्दर क्या है। बिना कल्पना की क्रियाशीलता के प्रकृति का कोई भाग सुन्दर नहीं दिख सकता। कलाकार अपनी लेखनी या तूलिका से प्राकृतिक सौन्दर्य को संशोधित करता रहता है। क्रोचे सौन्दर्य को व्यक्ति के मन में उत्पन्न मानते है, क्योंकि वस्तु अपने-आप में सुन्दर नही, वह व्यक्ति की कल्पना या भावना के कारण सुन्दर होती है। इन्द्रधनुष या गुलाब की सुन्दरता सहृदय के मन की अनुभूति है। फूल, तितली, इन्द्रधनुष, चाँदनी आदि को हम औपचारिक रूप से सुन्दर कहते हैं, वास्तव में वे सुन्दर नहीं हैं। हाँ, वे हमारी सौन्दर्य-भावना को उत्तेजित करने वाले जरूर हैं। क्रोचे सौन्दर्य को शत-प्रतिशत विषयीगत मानते हैं, विषयगत बिल्कुल नहीं।
- क्रोचे ने कला, और सौन्दर्य पर विस्तार से विचार किया है। उनकी मान्यताओं से सम्पूर्ण राहमति भले ही न जताई जा सके किन्तु उनकी विलक्षणता सन्देह से परे है।

अभिव्यंजना की अखंडता

क्रोचे के अनुसार, अभिव्यंजना को विभिन्न खंडों या पक्षों में बाँटकर नहीं देखा जा सकता क्योंकि यह एक संपूर्ण, संश्लिष्ट, अखंड इकाई है। कविता को भाषा, भाव, बिंब-विधान, अलंकार आदि में बॉटकर देखना या चित्र को पृष्ठभूमि, अग्रभूमि, रंग, आकतियों आदि की दृष्टि से विश्लेषित करके देखना कलाकृति के रूप में उसकी समग्रता को खंडित कर देता है। कला इस प्रकार टुकड़ों-टुकड़ों में बँटी हुई नहीं बल्कि एक संपूर्ण इकाई होती है। वैसे भी इस प्रकार का विश्लेषण तभी हो सकता है जब कला बाह्य जगत में अभिव्यक्त हो। वास्तव में तो कला मन में सहजानुमूति के स्तर पर ही पूर्ण हो जाती है व सहजानुभूति खंडों में बँटी हुई नहीं बल्कि मन में एक समग्र प्रभाव के रूप में ही उभरती है।

कल्पना व फेंसी सिद्धांत

(1) कल्पना सिद्धांत **(2) कैसा सिद्धांत**

- आप एक संपन्न कवि व समालोचक के रूप में याद रखे जाएंगे।
- आपका पूरा नाम - सैम्युअल टेलर कॉलरिज है।
- आपकी मृत्यु सन् 1834 में हुई। आपकी प्रसिद्ध कृति 'द बायोग्राफिया लिटरेरिया' रही है, जो कि 1817 में प्रकाशित हुई। तथा दूसरी प्रसिद्ध कृति 'लेक्चर्स ऑन शेक्सपियर' रही है।
- कॉलरिज को यह अवधारणा थी कि जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का निर्माण विभिन्न अंग मिलकर करते हैं,
- उसी प्रकार शब्द, भाव, बिम्ब, प्रतीक, अलंकार मिलकर काव्य की सृष्टि करते हैं।
- भाषा तो एक माध्यम है और भाषा के स्वभाव से काव्य निर्मित होता है। कॉलरिज का यह सिद्धांत भारतीय वक्रोक्ति वाद (कुंतक) व क्रोचे के अभिव्यंजनावाद से मेल खाता है, क्योंकि भाव, शब्द, बिम्ब व प्रतीक में कल्पना-तत्व की ही अधिकता होती है।
- कॉलरिज ने अपने कल्पना सिद्धांत में जिन तत्वों की स्थापना की है वे इस प्रकार है-
  1. कल्पना के द्वारा ही काव्य हृदयग्राही मर्मस्पर्शी एवं सजीव बनता है
  2. कल्पना के द्वारा अर्थात कल्पना के बल पर कवि अपनी कविता में कालजयी स्पर्श देता है।
  3. कल्पना शक्ति हृदय और बुद्धि का समन्वय करती है

4. कॉलरिज ने कल्पना को सौन्दर्य वाल्यांनी शक्ति एवं सृजनात्मक शक्ति के रूप में स्वीकार किया है
5. कॉलरिज का कल्पना सिद्धांत दर्शन एवं तत्व चिंतन की आधारशिला पर खड़ा है।
6. इनके मतानुसार कल्पना एक दिष्य प्रेरणा है। और ईश्वर की सृजना शक्ति की सहोदरी है।
7. कॉलरिज ने कल्पना के दो भेद किये-
   (a) आद्य कल्पना
   (b) गौण कल्पना
8. कॉलरिज के मतानुसार गौण कल्पना (विशिष्ट कल्पना) केवल महाकवियों में पायी जाती है
9. कल्पना विभिन्न तत्वों का एकीकरण करने वाली मानसिक शक्ति है। यह तो-"विरुद्धों का सामंजस्य" है।

Note- क्रोचे भी ज्ञान के दो प्रकार मानता है।-

(a) सहज ज्ञान

(b) बौद्धिक ज्ञान

सहज ज्ञान केवल कवि में होता है, जो कि पिछले जन्मों का संस्कार होता है। इसी प्रकार, **कॉलरिज की विशिष्ट कल्पना क्रोंचे के सहज ज्ञान से मेल खाती है।** और **विशिष्ट कल्पना** भी **पूर्वजन्म का संस्कार** है।

10. कलाकार (कवि) **प्रकृति की नकल न करके** उसका **पुनः सृजन करता है और उसे अपने अनुसार** सुंदर **बना लेता है**, फिर उसकी सुंदर कविता के रूप में रूप में अभिव्यक्ति करता है
11. कॉलरिज के अनुसार **कल्पना की महत्ता और क्षमता अपरिमित** है।
12. **कल्पना मानव मन के श्रेष्ठ पलों का लेखा-जोखा** है।
13. कवि कल्पना के द्वारा जीवन का **सजीव रूपांतरण** कर देता है और कल्पना **पदार्थ और मनोदेह** के अंतर को मिटा देती है।
14. कल्पना और ललित कल्पना (Fine Art) में अंतर होता है कि **कवि की सोच कल्पना होती है**, जबकि एक चित्रकार की **ललित कल्पना** होती है, जिसे कॉलरिज ने **फैंसी** कहा जाता है।
15. **कल्पना आत्मिक शक्ति है**, जबकि **ललित कल्पना यांत्रिक होती है**। अस्तु केवल और **कवि के पास ही कल्पना शक्ति होती है** और इस कल्पना का संबंध आत्मा व मन से है, जबकि ललित कला का संबंध केवल मस्तिष्क से होता है।**कल्पना व फैंसी सिद्धांत में दिन-रात का अंतर है। फैशन कभी कभी कल्पना की बराबरी नहीं कर सकती।**

आई. ए. रिचर्ड्स

- **रिचर्ड्स का जन्म 1893 ई. में अमेरिका में हुआ।**
- आप **मनोविज्ञान व अर्थशास्त्र के विद्यार्थी थे,** इसके बाद **हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर बने।**
- इन सबके बावजूद, साहित्य की दुनिया में वुमद रखा, तथा सारी दुनिया में **साहित्य आलोचक** के रूप में मशहूर हो गए। जिसका प्रमाण है :
- **"The Principles of Literary Criticism"**
- हालांकि इस किताब में अनेक सिद्धांत दिए, पर दो सिद्धांत विश्व प्रसिद्ध हुए —
  1. **मूल्य सिद्धांत**
  2. **संप्रेषण सिद्धांत**

मूल्य सिद्धांत –

कविता की उपयोगिता ही उसका मूल्य है, अर्थात – **"कला, कला के लिए नहीं, अपितु जीवन के लिए होनी चाहिए।" काव्य की सौंदर्यानुभूति ही उसका मूल्य है**, अर्थात –**जिससे मानव की आत्मा का विरेचन है रिचर्ड्स का मानना है की जीवन से विलग कोई कला होती ही नहीं है।** और निम्नांकित बिंदुओं के आधार पर **रिचर्ड्स** अपने **मूल्य सिद्धांत** को स्पष्ट करते हैं।

1. काव्य रचना एक मानवीय प्रक्रिया है और अन्य विज्ञानों से श्रेष्ठ है एवं आत्मा का भोजन है इसलिए अन्य क्रियाओं का जो मूल्य है उससे अधिक मूल्य काव्य का है।
2. काव्य मूल्यों का संबंध हमारे मानसिक उद्वेगों से है। और ये मानसिक उद्वेग दो प्रकार के होते हैं -
   (a) प्रवृति मूलक उद्वेग
   (b) निवृत्ति मूलक उद्वेग
   इसमें प्रवृति मूलक उद्वेग मनुष्य को संतुष्ट करते है जब इनकी पूर्ति न हो तो मानसिक असंतोष/असंतुलन पैदा होता है। और पदार्थ की प्राप्ति होती है यह उद्वेग शांत हो जाते है, परन्तु निवृत्ति मूलक उद्वेगों को शांत करने का एक उपाय है-
3. वह कविता और भी अधिक मूल्यवान है जो हमारी आकांक्षाओं को संतुष्ट करती है जिससे हमारी वृतियाँ क्षुष्म नहीं होती।
4. कविता का महत्व इसलिए भी है क्योंकि वह हमें जीवन के ऐसे अनुभव प्रदान करती है जो कि इस नितांत भौतिकवादी युग में मानव मन को संतुलित कर हमें शांति प्रदान करती है।
5. रिचर्ड्स की धारणा थी कि कविता का अल्प एक उत्तरकालीन प्रभाव हो और मनुज्य के अविगों में सतत् संतुलन पैदा करती है। और अन्यं क्रियाओं केलिए भी स्फूर्ति प्रदान करती हो
6. अतः रिचर्ड्स कला, कला के लिए सिद्वान्त के विरोधी थे।

टी. एस. इलियट के सिद्धांत

निवैयक्तिकता का सिद्धान्त

- इलियट के अनुसार कला व्यक्तित्व की अभिज्ञव्यंजना नहीं बल्कि उसमें पलायन है। उन्होंने स्पष्ट किया कि लेखन व कवि का व्यक्तित्व एक उत्प्रेरक की तरह होता है।
- अभिव्यंजना के संदर्भ में क्रोचे अतः प्रज्ञा को महत्वपूर्ण मानते हैं।
- कला को वह अतः प्रज्ञा की उपस्थिति ही मानते है।
- इलियट ने कला को दूर से देखी जाने वाली वस्तु के रुप में प्रस्तुत किया।
- निर्वयन्जिकता सिद्धांत स्वच्छदतावादियों के काव्य - सिद्धांत के विपरीत है।
- इलियट ने दावा किया कि स्वच्छदतावादियों की रचना - प्रक्रिया भावों को अभिज्ञव्यक्ति नहीं बल्कि उनका दमन करती है!
- वस्तुतः अच्छी कविता वह देती है, जिसमें कवि अपने भावातिरेक का प्रदर्शन नहीं करता है:
- इलियट ने काह कि अच्छा रचनाकार कविता में अत्यंत संयमित आत्मा - अभिव्यक्ति करता है।

परंपरा सिद्धांत

- यह इलियट का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसके अनुसार किसी भी रचना का मूल्यांकन रचना - शीलता की संपूर्ण परंपरा की सापेक्षता में होना चाहिए।
- इलियट परंपरा को वर्तमान से अलग नहीं बल्कि उसका ही एक हिस्सा मानते हैं।
- इसका अर्थ है कि किसी रचना का महत्व उतना ही होता है, जितना समंजन वह संपूर्ण परंपरा में करती है।
- नए कवियों के लिए इलियट अतीत के ज्ञान को जरूती मानते है।

मार्क्सवाद

- साम्यवाद या मार्क्सवाद एक ही विचारधारा के दो नाम है जिसे वैज्ञानिक समाजवाद और क्रांतिकारी समाजवाद भी कहा जाता है। समाजवाद के दो अन्य रूपों स्वप्नदर्शी समाजवाद तथा विकासवादी समाजवाद से अलग किया जा सके।
- मार्क्सवाद का प्रतिपादन कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंजेल्स नाम के यूरोपीय चितंको ने 19 वीं सदी में किया था।
- जहाँ तक भारत का प्रश्न है, स्वाधीनता संग्राम के दौरान मानकेन्द्र नाथ रॉय मार्क्सवाद के प्रखर समर्थकों में शामिल थे।
- वर्तमान समय में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, फॉरवर्ड ब्लॉक आदि, राजनीतिक पार्टी इस विचार धारा का स्पष्ट प्रभाव नजर आता है।

मार्क्सवादी विचारधारा

- मार्क्सवाद एक जटिल विचारधारा है जिसमें बहुत से विचार निहित है।
- मार्क्सवाद के दो प्रमुख सिद्धांत है – द्वंद्वात्मक भौतिकवाद तथा ऐतिहासिक भौतिकवाद।
- मार्क्सवाद द्वंदात्मक के नियम को मानता है और उसका दावा है कि प्रकृति और समाज में होने वाले सभी परिवर्तनों के मूल में यही नियम कार्य करता है। इस धारणा के अनुसार प्रकृति की हर वस्तु तथा दुनिया के प्रत्येक समाज में कुछ भीतरी अंतविरोधी होते है।
- मानव समाज का सबसे महत्वपूर्ण नियम है कि इसमें एक बुनियादी ढाँचा होता है तथा शेष ऊपरी ढाँचे होते है। बुनियादी ढाँचा उत्पादन प्रणाली या अर्थव्यवस्था को कहते है।
- मार्क्स का दावा है कि हर समाज दो वर्गो अमीर तथा गरीब में विभाजित होता है। इतिहास के किसी चरण में कुछ व्यक्ति बलपूर्वक उत्पादक संपत्तियों के मालिक बन जाते है।
- मार्क्स के अनुसार शोषित वर्ग की समस्याओं का एक ही समाधान है कि वह संगठित होकर हिंसक क्रांति करे। वर्ग चेतना अर्थात् अपने वर्ग की वास्तविक स्थितियों तथा हितों की समझ पैदा हाने पर शोषित वर्ग अपने अधिकारों के लिए जागरूक होता है।
- मार्क्सवाद का मानना है कि सभी सामाजिक समस्यों की जड़ निजी संपत्ति की धारणा में छिपी है। निजी संपति ही समाज में विषमताएँ पैदा करती है।
- मार्क्सवाद में निजी संपत्ति की व्याख्या अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत द्वारा की जाती है।
- मार्क्सवाद राज्य का विरोध करता है अतः वह अराजकतावाद का समर्थक है। उनका दावा है कि साम्यवाद से राज्य लुप्त हो जाता है।
- मार्क्स ने धर्म का विरोध किया है । उसकी राय में धर्म अफीम के समान है क्योंकि वह शोषित व्यक्ति को वास्तविक वर्ग – शत्रु से संघर्ष करने के स्थान पर अलौकिक सुखों के लिए प्रेरणा देकर भटका देता है।
- मार्क्सवाद राष्ट्रवाद का भी विरोध करता है। मार्क्स राष्ट्रवाद को पूँजीवाद का ही हथियार मानता है। जिसे पूँजीवाद ने इसलिए उभारा है ताकि मजदूरों को नकली प्रश्न में उलझाया जा सके।
- मार्क्स अंतर्राष्ट्रवाद में विश्वास करता है क्योंकि दुनिया भर के मजदूरों की हालत प्रायः एक सी है। मजदूरों का कोई देश नही होता – मार्क्स द्वारा कहा गया है। उसने नारा भी यही दिया – दुनिया के मजदूरों एक हो जाओं।
- मार्क्सवाद के समर्थकों का एक वर्ग विवाह और परिवार संस्थाओं का भी विरोधी है क्योंकि ये संस्था निजी संपत्ति की सुरक्षा और हस्तांतरण के लिए विकसित हुई थी।
- मानव इतिहास की व्याख्या के अंतर्गत मार्क्स ने इतिहास की कुछ अवस्थाओं का जिक्र किया। वे अवस्थाएँ इस प्रकार है–
  - ✓ **आदिम साम्यवाद** – यह सामाजिक जीवन की शुरूआत का समय है जब न तो निजी संपत्ति की धारणा थी और न ही शोषण। सभी मनुष्य सामुदायिक जीवन जीते थे।
  - ✓ **दास व्यवस्था** – यह मानवीय सभ्यता का सबसे बुरा दौर था क्योंकि इसमें शोषक वर्ग ने निम्नवर्ग के मनुष्यों की संपत्ति को दबा लिया था। दास और मालिक इस समय के दो वर्ग थे।
  - ✓ **सामंतवाद** – कृषि अर्थव्यवस्था की शूरूआत के साथ ही सामंतवाद का उदय हुआ और इसमें दो वर्ग ने है – सामंत और कृषक। कृ'ाकों को दासो की तुलना में ज्यादा अधिकार प्राप्त थे किंतु उन्हें बेगार करनी पड़ती थी।
  - ✓ **पूँजीवाद** :– औद्योगिक क्रांति के साथ ही पूँजीवाद का उदय हुआ जिसमें – पूंजीपति तथा मजदूर दो वर्ग बने। इसमें मजदूरों को अनुबंद की स्वतंत्रता दी गई।
  - ✓ **समाजवाद** – समाजवाद पूँजीवादी के तुरंत बाद की स्थिति है जिसे सर्वहारा की तानाशाही भी कहा जाता है। इस अवस्था में राज्य तो रहता है किंतु वह जनसाधारण के पक्ष में होता है।
  - ✓ **साम्यवाद** – साम्यवाद अंतिम अवस्था है जिसे मार्क्स का यूरोपिया या स्वप्नलोक भी कहते है। जहाँ राज्य लुप्त हो जाता है वहाँ धर्म मानवीय चेतना से हट जाता है। इस अवस्था में न शोषण रहता है, न राष्ट्र न विवाह या परिवार और न ही किसी प्रकार का अलगाव। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता और रूचि के अनुसार कार्य करता है तथा उसे जरूरत के अनुसार उपलब्धियाँ मिलती है।
  - ✓ **मनोविश्लेषणवाद** :– मनोविश्लेषण शब्द अंग्रेजी के Psycho एनैलिसिस का हिन्दी पर्याय है।
  - ✓ **सिगमंड फ्रायड** :–19 वी सदी के उत्तरार्द्ध में इनके द्वारा मानसिक रोगियों का इलाज करते हुए मानसिक व स्नायविक विकारों के संबंध में दिया गया सिद्धांत व व्यवहार मनोविश्लेषण कहलाता है।

- फ्रायड ने पाया कि सम्मोहन क्रिया अथवा वार्तालाप में स्वच्छंद विचार साहचर्य से कई पुराने अनुभव पुनर्जीवित हो जाते है।
- शैशवीय दमित कामवृत्ति वह मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है, जिस पर वे पहूँचे।
- उन्होने इसे जीवन की मुख्य प्रेरक शक्ति माना है। वह शिशु के जन्म से ही क्रियाशील रहती है।
- शैशव में मानस में केवल इगो ही विकसित रहता है, इमन का प्रश्न नहीं उठता किंतु समाज और नैतिक दवातों के कारण यहाँ और सुपर इगो का विकास होने लगता है।
- शिशु की कामवृत्ति अपने माता–पिता और भाई बहनों की ओर प्रेरित होती है किंतु नैतिक निषेधों के कारण यह वृत्ति दमित होती रहती है और व्यक्ति के मन में कुठाएँ पैदा हो जाती है।
- फ्रायड के अनुसार ये दमित वासनाएँ और कुठाएँ साधारण स्वस्थ जीवन में भी अपने को व्यक्त करने का प्रयास करती रहती है।
- अधिक प्रबल होने पर कोइ मानसिक – स्नायविक रोग हो जाते है जैसे :– हिस्तोरिया आदि जीवन की भूलें है।
- मानव का छोटे से छोटा व्यवहार भी सप्रयोजन होता है। मानसिक जीवन में कुछ भी अकश्य अथवा निष्प्रयोजन नही होता है।
- फ्रायड के विचारों का फल व साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा।
- फ्रायड के सहयोगियो व ि"ष्यो में एलडन व युंग ने फ्रायड से असहमति रखकर कुछ भिन्न सिद्धांतो का प्रतिपादन किया है।

एलडन

- एलडन के मनोविज्ञान में आत्म स्थापना की प्रवृत्ति की ही प्रमुखता है कामवृत्ति की नहीं।
- एलडन के मनोविज्ञान में लिबिको अथवा कामवृत्ति से अधिक महत्व अहम् को दिया गया।
- उसका मत है कि फ्रायड कामवृत्ति को आवश्यक महत्व देते है।

जुंग (युंग)

- वह भी फ्रायड के इस मत से असहमत थे कि जीवन की प्रमुख प्रेरक शक्ति कामवृत्ति है।
- उन्होने लिबिको शब्द का अधिक विस्तृत अर्थ लिया जिसमें फ्रायड की कामवृत्ति व एलडन की आत्मस्थापना प्रवृत्ति दोनो ही समन्वित है।
- व्यक्तित्व के प्रकारो का सिद्धान्त युंग का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है। उनके अनुसार व्यक्ति मुख्यतः दो प्रकार के होते है :–
  - ✓ जिनका ध्यान व शक्ति अपने पर ही केन्द्रित रहती है।
  - ✓ जिनकी शक्ति सामाजिक व भौतिक वातावरण की ओर प्रकट होती है।
- जहाँ विचारो व भावनाओ में केन्द्रित होने के कारण अर्न्तमुखी व्यक्ति अधिक भावुक, कल्पनाशील, एकान्त प्रिय होते है।

मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव

- मनोविश्लेषण का सिद्धांत बींसवी सदीं का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसमे साहित्य व कला का दुनिया पर भी व्यापक प्रभाव डाला।
- नैतिकता व उसके प्रतिमानो पर एक नई समझ विकसित हुई।
- अंग्रेजी साहित्य में डी.एच.लॉरेन्स व जेम्स जॉयस इसके प्रमुख लेखक है।

अस्तित्ववाद

- व्यक्ति के विकास व निर्माण को समाज विभिन्न वर्जनाओं से वि"ोद्ध करता है।
- सभी पूर्व मान्यतायें सामाजिक, धार्मिक व नैतिक अवधारणा के विरोध में सर्वप्रथम आवाज डेनिश विद्वान व धार्मिक चिंतन सोरेन कीर्केगार्ड ने उठाई।
- यूरोप की 19 वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिकता व मशीनीकरण ने मानवीय अस्तित्व की स्वतंत्रता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिये।
- कीर्केगार्ड हीगल दर्शन के विराधी थे।
- कीर्केगार्ड के बाद 19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जर्मन दार्शनिक नीत्शे ने इस दर्शन को आगे बढ़ाया।

- अस्तित्ववाद का व्यापक उन्मे'ा प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी में हुआ। इसके बाद यहाँ फ्रांस, इटली होते हुए एशिया में आया।
- अस्तित्ववाद के प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार है –
  - ✓ व्यक्ति का अस्तित्व बाह्य सत्ता के अधीन नहीं।
  - ✓ ज्ञान– विज्ञान को महत्वहीन मानना।
  - ✓ व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा के अनुसार जीवन जीना चाहिए।
  - ✓ सुख की निरर्थकता।
  - ✓ अस्तित्व का बोध दुःख, त्रास व मृत्यु के क्षणों में संभव हो ।
  - ✓ मृत्यु को मानवीय स्थिति की सीमा मानना।
  - ✓ जीवन के प्रति विद्रोह जीवन के परंपरा मूल्यो, समाज, धर्म आदि के प्रति विद्रोह से है।
- अस्तित्व को पुष्ट करने वालों में कार्ल जेस्पर्स, मार्टिन हाइडेगर, गेब्रियल मार्शल, सार्त्र, फ्रांस काफ्का आदि प्रमुख है।
- अस्तित्ववादी धर्म व ईश्वर को लेकर दो वर्गों में विभक्त है – आस्थावादी, अनास्थावादी।
  - ✓ आस्थावादियों में कीर्केगार्ड व बूबर महत्वपूर्ण है।
  - ✓ अनास्थावादी अस्तित्वाद के केंद्र में रहे। इनमें नीत्शे, सार्त्र, कामू प्रमुख है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यह विश्व की सबसे प्रमुख विचारधाराओं में से एक बन गया।

उत्तर आधुनिकतावाद

- उत्तर आधुनिक, उत्तर आधुनिकता और उत्तर आधुनिकतावाद शब्दों के अत्यधिक प्रयोग के बावजूद अभी तक इनका कोई सर्वसम्मत अर्थ या परिभाषा तय नहीं हो पाई है।
- उत्तर आधुनिकता से जब उत्तर आधुनिकतावाद बनता है, तब उसका अर्थ इस प्रकार किया जा सकता है– आधुनिकता की परवर्ती विचार पद्धति या उसकी विरोधी विचारधारा।
- जैसे आधुनिकतावाद पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न हुआ था, वैसे ही उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तर पूँजीवादी व्यवस्था से उपजा है।
- यदि प्रौद्योगिकी के विकास ने ज्ञान के स्परूप उसके अर्जन आदि वितरण में आमूल चूल परिवर्तन किया है, तो उपभोगवाद ने बाजार को केन्द्रस्थ कर दिया है। इस विश्वबाजार में मनुष्य विक्रय की वस्तु भी है, विक्रेता भी है और क्रेता भी। अब मनुष्य, मनुष्य नही रह गया है।
- ल्योटार्ड ने अपनी पुस्तक पोस्टमॉडर्न कंडीशन में उत्तर आधुनिक समाज से जड़ी निम्नलिखित चीजों पर विचार किया है–
  - ✓ बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विज्ञान और प्रौधोगिकी के विकास में भाषीकी ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।
  - ✓ प्रौद्योगिकी के विकास ने ज्ञान का स्वरूप और लक्ष्य बदल दिया है, अब ज्ञान साध्य न रहकर साधन बन गया है तथा बाजार की वस्तु बन गया है।
  - ✓ उत्तर आधुनिक समाज में वहीं ज्ञान महत्वपूर्ण व सार्थक है जिसे वैद्युत मास्तिष्क में संखित किया जा सकता है और जिसे बाजार में बेचकर धनार्जन किया जा सकता है।
- देश की शक्ति ज्ञान के इस नए स्वरूप और उसके संचय – वितरण की प्रौद्योगिकी में संपन्नता से तय होगी।
- ज्ञान के स्वरूप की इस नवीनता को ध्यान में रखकर ही ल्योटार्ड ने ज्ञान के दो रूपों की चर्चा की है – ज्ञान या वैज्ञानिक ज्ञान और आख्यान।
- आधुनिक काल में वैज्ञानिकों ने आख्यान या विज्ञानोत्तर ज्ञान को आर्धवर्वर, अर्धसभ्य, भ्रांत, अज्ञानग्रस्त आदि सिद्ध किया।
- इसके कारण उत्तरआधुनिकता में आख्यान और महाख्यान को लेकर अविश्वास का भाव बना हुआ है। ल्योटार्ड ने उत्तरआधुनिकता को अविश्वास के आधार पर ही परिभाषित किया है।
- फूकों ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला है कि मानव की मृत्यु हो गई है। अब वह मात्र विषय है, विषयी नहीं। सता एवं शक्ति उसका उपयोग करती है।
- फूको ने स्वतंत्रता को आधुनिकतावाद की कल्पना मात्र माना।

- ज्या ब्रोदीला उत्तरआधुनिकता के एक और पथ को सामने लाता है मुद्रण–माध्यमों में इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार – माध्यमों से बिंबो के माध्यम से किया जाता है।
- संप्रेषण की इस प्रक्रिया से महत्वपूर्ण रूप से यथार्थ की समझ परिवर्तित हो जाती है। पदार्थ व उनके प्रतीको का अन्तर समाप्त हो जाता है।
- उत्तर आधुनिकतावाद में विज्ञान की जगह अनुभव की वापसी है, योजना की जगह बाजार है, धर्मनिरपेक्षता की जगह धर्मिक पहचान है।
- उत्तर आधुनिकता अंतवादी दर्शन है और उसमें इतिहास का अंत, विचारधारा का अंत, कविता का अंत, आदि स्थापनाएँ दिखाई देती है।
- देरिदाने दी एंड ऑफ मैन में लिखा है – मृत्युपर्व का जो क्रम ईश्वर की मृत्यु से शुरू हुआ था।
- केदारनाथ सिंह की कविता बाध की निम्नलिखित पक्तियाँ देखी जा सकती है – अंत : में मित्रों/ इतना ही कहूँगा की अंत महज का मुहावरा है, जिससे शब्द हमेशा विस्फोट से उड़ा देते है और बचा रहता है हर बार वही एक कच्चा–सी । जहाँ से हर चीज फिर से शुरू हो सकती है।

विखण्डनवाद

विखण्डनवाद पश्चिम की साहित्य समीक्षा प्रणाली वि का नवीनतम आयाम है। उत्तर आधुनिक विचारक जॉक देरिदा (Jacqued Darrida) इसके प्रवर्तक हैं। देरिदा फ्रांस के प्रख्यात दार्शनिक, भाषाविद, आलोचक एवं विचारक हैं। सन् 1930 ई. में अल्जीरिया के एक यहूदी परिवार में देरिदा का जन्म हुआ था और पेरिस के निकोले नोरमले नामक प्रतिष्ठित संस्था में उच्च शिक्षा प्राप्त की। सन् 1965 ई. में इनके दो लिखित निबंधों 'क्रिटिक (Critique)' एवं 'ग्रामेटोलोजी' (Gramatology) से इन्हें विचारक रूप की प्रतिष्ठा मिली। देरिदा मूलतः एक भाषावैज्ञानिक हैं और उनके विचारों की केन्द्र भाषा है। सोस्यूर के भाषा संबंधी चिन्तन ने देरिदा को भीतर तक प्रभावित किया है। वस्तुतः सभी उत्तरसंरचनावादी विचारकों पर सोस्यूर का प्रभाव लक्षित किया जा सकता है। देरिदा उत्तर-संचनावादी हैं, इसीलिए इन्हें उत्तर आधुनिकतावादी भी कहा जा सकता है। हालांकि देरिदा ने अपने उत्तर-संरचनावादी होने को अस्वीकार किया है, पर विखण्डन (Deconstruction) और भेद (Difference) पर उनकी जो मान्यतायें हैं, उससे वे स्वतः उत्तरसंरचनावादी सिद्ध हो जाते हैं।

देरिदा उच्चकोटि के भाषाविद् हैं। भारत में देरिदा का प्रवास 1997 में रहा है। देरिदा ने तेईस जनवरी सन् 1997 को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के प्रांगण में तथा कलकत्ता में अपना महत्वपूर्ण भाषण दिया था। इसी के साथ इस देश में भी विखण्डनवाद की महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज हुई है। 'विखण्डनवाद' देरिदा की महत्वपूर्ण दार्शनिक अवधारणा है। 'विखण्डनवाद' की इस अवधारणा ने धीरे-धीरे साहित्य कला, शिक्षा मनोविश्लेषण, सामाजिक विज्ञान आदि ज्ञान की शाखाओं में अपनी पैठ बना ली हैं। विभिन्न आलोचक 'विखण्डन' का संबंध देरिदा से पूर्व नित्से और हार्डडेगर से जोड़ते हैं। देरिदा ने ही इसे विविधत दार्शनिक आधार पर सिद्धान्त रूप में प्रतिष्ठित किया। देरिदा के आगे डिलिसमिलर पाल डी. मन हार्डमैन आदि विद्वानों ने 'विखण्डनवादी' विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्तमान में विखण्डनवाद के बारे में दो प्रकार के विचार करने वाले विद्वान हैं। प्रथम प्रकार के विद्वान इसे क्रन्तिकारी विचार मानते हुए इसकी जोरदार वकालत करते हैं तो दूसरे मत के विद्वान इस विचार को निरर्थक और आंतकवादी तक कहते हैं।

देरिदा के 'विखण्डन' की अवधारणा दर्शन की तत्वमीमांसा (Metaphysics) की विरोधी है। देरिदा तत्वमीमांसा का विखण्डन करते हैं। यह विखण्डन की अवधारणा 'भेद' (Difference) पर आधारित हैं। इस भेद शब्द का पहला अर्थ है 'मतभेद' (Figgrt) होना, दूसरा अर्थ है स्थगित (Defer) करना। इस प्रकार विखण्डनवाद की रणनीति भेद की रणनीति है अर्थात् मतभेद होना या स्थगित करने की रणनीति। इसका उद्देश्य है उलट देना या बर्खास्त करना। सामान्य शब्दों में विखण्डन से तात्पर्य किसी मूल पाठ (Text) को उलट देने या स्थगित कर देनो से है। 'भेद' की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर उन्होंने पोस्टकार्ड भेजने का उदाहरण दिया। पोस्ट बॉक्स में कोई पत्र डालने के दूसरे तीसरे दिन बाद यह अपने गंतव्य तक पहुँचता है। प्रतीक्षा के इस तीन दिन कि समय में वस्तुतः पत्र पोस्टबाक्स में डालने या प्राप्त करने का भेद या अंतर है। देरिदा का भेद के बारे में यह कथन है कि विखण्डन की आज जो स्थिति है वह एक मध्यवर्ती स्थिति है, अन्तिम स्थिति नहीं। जो भी हो, जॉक देरिदा यहाँ भेद को स्पष्ट करने में असमथ रहे। भेद की अवधारणा में वे 'स्वरूप' को महत्वपूर्ण मानते है; भेद का अर्थ वे तत्वमीमांसा से जोड़ते हैं।